VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

श्री लंका में हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार और आधुनिक परिस्थिति का विश्लेषण
(SHRI LANKADA HINDI TILI TARG'IBOTI VA BUGUNGI MUAMMOLAR)

https://doi.org/10.5281/zenodo.7396117

Bresil Nagoda Vithana
Senior Lecturer in hindi,
Sabaragamuwa University of Sri Lanka, Sri Lanka
Email: bresil@ssl.sab.ac.lk
Fone: +91 84849 49127

ANNOTATION

This article provides statistical information about the study of Hindi in Sri Lanka, demand for this language, schools and universities where Hindi is taught.

Key words: *Sri Lanka, dictionary, Shantiniketon, Diaspora, Tagore.*

ANNOTATSIYA

Ushbu maqolada Shri Lankada hindi tilining o'rganilishi, ushbu tilga bo'lgan extiyoj, hindi tili o'qitiladigan maktablar, universitetlar haqida statistik ma'lumot beriladi.

Kalit so'zlar*: Shri lanka, lug'at, shantiniketon, diaspora, Tagor.*

श्री लंका में हिन्दी भाषा की शिक्षण व्यवस्था अर्वाचीन नहीं है क्योंकि उसके प्रचलन का इतिहास पाँच-छह दशक या उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरकाल तक पीछे चला जाता है। लेकिन श्री लंका में औपचारिक हिन्दी शिक्षण व्यवस्था का प्रारंभ 1950 के बाद हुआ था। इससे पहले हिन्दी तथा अन्य भारती भाषाओं का भी श्री लंका में व्यवहार हो रहा था। सन् 1880 में एल्फिनिस्टन् नाट्य कंपनी मुंबई से श्री लंका का आगमन एक महत्वपूर्ण घटना थी। उन लोगों के साथ कलाकार, संगीतकर और कला से संबंधित विभिन्न व्यक्ति आ गये थे। ये लोग अंग्रेजी के साथ साथ आपस में अपने कामों में हिन्दी तथा मराठी भाषाएँ बोलते थे। तब इनके संपर्क में रहे श्री लंकाई व्यक्ति भी हिन्दी भाषा के संपर्क में आ गये और हिन्दी बोलने तथा समझने लगे। इसी बीच में नाटक दल के निदेशन से सत्य हरिश्चंद्र, रामायण तथा इंद्रसभा आदि भारतीय कथाओं का अनुवाद करके मंचन किया गया जिससे श्री लंकाई दर्शक तथा नाटक प्रेमी प्रफुल्लित हो गए और नाट्य कला के प्रति अधिक झुकने लगे। इसी प्रभावाश नाटक और उत्तर भारतीय संगीत का प्रचालन धीरे-धीरे हो लगे थे। इसके प्रभाववश श्री लंकाई कलाकारों को भारत में स्थित शांतिनिकेतन तथा भातखण्डय शैक्षिक संस्थाओं में प्रवेश पाने का अवसर भी मिले थे। इससे उन्हें हिन्दी तथा भारत के प्रति अधिक प्रेम उत्पन्न हुआ।

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिल काल में माहपंडित रबिन्द्रनाथ ठाकूर महोदय का श्री लंका आगमन यहाँ भारतीय विरासत के उद्भव और विकास के लिए प्रोत्साहन मिल। उनके आगमन के साथ साहित्य, कला और राजनीति के साथ देशप्रेम की भवना भी जागृत हुई। श्री लंका और भारत या ठाकुर परिवार के साथ इतना दृढ़ संबंध था कि रबिन्द्रनाथ महोदय के आने के पहले उनके पिताजी ने सन् 1860 में श्री लंका में यात्रा की थी। रबिन्द्रनाथ ठाकुर महोदय का तीन बार श्री लंका में आगमन हुआ जो क्रमश: 1922, 1928 और 1934 में है। ठाकुर महोदय श्री लंका के तत्काल के राजनैतिज्ञ, साहित्यकार और कलाकारों से मिले थे और उनसे यहाँ के राजनीति, साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में काफी प्रभाव पड़ा। उनकी यात्राओं के दौरान उन्होंने श्री लंका के नामी व्यक्तियों से मिले, विशेष जगहों में यात्रा भी की और कई शास्त्रीय सभाओं में भाषण भी दिये थे। । सान् 10 नवंबर 1922 में तत्काल श्री लंका में प्रसिद्ध आनंद विद्यालय के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अथिति के रूप में बुलाया गया था। उनकी अंतिम यात्रा सन् 1934 में हुई थी और उन्होंने कला के प्रचार-प्रसार हेतु 20 मई 1934 में "श्रीपाली" सौदार्य निकेतन की नीव अपने करकमलों से रखी। नोबेल पुरस्कार से पुरस्कृत महान कलाकार एवं संगीतकार रबिन्द्रनाथ ठाकुर महोदय की यात्राएँ श्री लंका में भारतीय भाषाएँ तथा संस्कृति के प्रचार-प्रसार का प्रेरणा स्रोत रहा।[1]

सन् 1936 भारतीय महान साहित्यकार वैद्यनाथ मिश्र की श्री लंका यात्रा और केलानिय विध्यालंकार परिवेण में अपना नाम नागार्जुन में बदलकर प्रवृर्जा ग्रहन करना या बौद्ध भिक्षु बनना भी एक प्रेरणात्मक घटना हुई थी। भान्ते नागार्जुन से प्रेरित उस परिवेण के भान्ते गण भी अनौपचारिक रूप से हिन्दी का अध्ययन करने लगे। वैसे पंडित राहुल सांकृत्यायन, भन्ते आनन्द कौशल्यन, प्रो. हेमचन्द्र राय आदि महान ज्ञानियों का श्री लंका तथा परिवेणों में आगमन श्री लंका में हिन्दी भाषा के श्री गणेश के लिए प्रेरणा मिली।

सन् 1950 रेडियो सिलोन में हिन्दी सेवा का अरम्भ भी श्री लंका में हिन्दी प्रचार-प्रसार का एक प्रेरणा स्रोत हुआ था। उसमें काम करने के लिए भारत से उद्घोषक आए थे जिन में विजय किशोर दुबे, गोपाल शर्मा, हसन रज़वी, कुमार और मनोहर्जन, सुनील दत्त और विमल कामिनी आदि उद्घोषक और उदगोशीकाओं ने श्रेष्ठ कार्य संभाला। उनका उद्देश्य रहा कि रेडियो सीलोन को दक्षिण एशिया में "King of the airwaves" बनाना। इसमें "बिना का गीतमाला" और "लिप्टॉन के सितारे" जैसे कार्यक्रम प्रसारित हुए। इस हिन्दी सर्विस में अधिकांश हिन्दी फिल्मी गानों का प्रसारित हो रहा था जिसके श्रवण के लिए देशी-विदेशी अधिक श्रोता गण एकत्रित हुए। इसी बीच में प्रसारण के लिए बहुत भारतीय विज्ञापन आने लगे जिनसे सर्विस की आमदनी भी बढ़ने लगी। [2]

[1] Coparahewa, Sandagomi, Tagore's visits to Sri Lanka, Research Gate, January 2013
[2] Corea, Vernon, the Hindi Service of Radio Ceylon, Lanka web,19 December 2020

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

जब श्री लंका में हिन्दी प्रचार-प्रसार की पृष्ठभूमि पर ध्यान दें तब सिनेमा के प्रभाव छोड़ दिया जाए तो अधूरा महसूस होता है। प्रारंभ से ही श्री लंकाई सिनेम पर यूरोपीय तथा भारतीय प्रभाव था लेकिन उनमें से भारतीय प्रभाव प्ररम्भ से अभी तक द्रष्टव्य है। सिंहली सिनेमा पर दक्षिण भारतीय फिल्मों का प्रभाव अधिक पड़ा था। मदान तिएटेर कंपनी तथा एस्.एम् नायगम स्टूडियो में पहले फिल्म बनती थी जो भारतीय है। प्रारंभिक सिंहली फिल्म पर उत्तर भारतीय नूरती संगीत का प्रभाव रहा। सान् 1947 में प्रथम सिंहली फिल्म "कड़ऊन पोरोनडुव"(Broken Promise) परदे पर आयी वह भी दक्षिण भारत में निर्माण होकर आयी थी। सन् 1947 से सिंहली फिल्में बनने लगीं मगर उस समय के फिल्म निर्माता और निदेशक भारतीय फिल्म उद्योग के प्रभाव से बच नहीं पाए। क्योंकि उन लोगों ने जिसप्रकार भारतीय फिल्मों के कथानक, पात्र और गीत-संगीत होते थे उसी प्रकार ही सिंहली फिल्में भी बनाते थे। परिणामतः उन लोगों ने भारतीय संगीतकारों तथा गायक-गायिकाओं को भी श्री लंका बुलाए और उनसे सिंहली गाने गवाये थे। उनमें लत्ता मंगेशकर, आशा भोनले, जिककी, एस्. एस् वेदा, दक्षिण मूर्ति प्रमुख थे। सन् 1955 में लत्ता जी ने सिंहली फिल्म "सेड़ सुलन"(sædə sulan) के लिए "श्री लंका मा प्रियादार जयभूमि"[3] सिंहली गाना गाया था। आरंभिक दशकों में श्री लंका में जब फिल्में बनायी जाती थीं तब उनके गाने प्रसिद्ध हिन्दी गानों के धुनों पर सिंहली शब्द फिरोने से बनाते थे। आजकल भी श्री लंका में बहुत भारतीय फिल्मों के कथानकों के आधार पर फिल्में बनायी जाती हैं। श्री लंका के फिल्मों के प्रारंभी युगों के सभी गायक-गयिकाएँ इन धुनों पर गाते थे और बहुत नाम कमाये जिनके गाने आज भी लोकप्रिय हैं। इस परंपरा के गायक-गायिकाओं में लत्ता वलपोल, सुजाता अत्तनायके, कलावती, जी. एस्. बी रानी, एच. आर. जोतिपाल, ग्रेषण आनंद, मोहिदीन बेग, धर्मदास वलपोल, एंजलीन गुनातीलक आज भी बहुत लोकप्रिय हैं। वर्तमान में भी भारतीय कलाकार श्री लंकाई फिल्मों में काम करते हैं वैसे भारतीय फिल्मों में श्री लंकाई कलाकार भी काम करते हैं।

इस लंबी चर्चा केवल श्री लंकाई फिल्मी या संगीत के इतिहास के प्रति ध्यान अवगत करना नहीं वरन हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार की पृष्ठभूमि के निर्माण का इतिहास ढूँढना है। इसके अतिरिक्त और भी साधन हैं जिनसे भारत और श्री लंका के बीच का संबम्ध बढ़ने में सहायक हुए थे जैसे पर्यटन, धर्म, राजनीति, व्यापार और शैक्षिक आवश्यकएँ लेकिन उनका सम्बद्ध चर्चित मुद्दों की तुलना में गौण मना जा सकता है और वे अर्वचीन भी होते हैं। प्रस्तुत मुख्य और गौण साधन श्री लंका में हिन्दी शिक्षण के विकास के प्रेरणा स्रोत बने और परिवर्ती काल में औपचरिक हिन्दी शिक्षण के भी प्रेरणा स्रोत हैं।

धार्मिक और साहित्यिक प्रभाव के कारण सबसे पहले हिन्दी शिक्षण के कार्य का श्री गणेश बौद्ध परिवेणों के अश्रय में होने लगा। परिवेणों में पढ़ने वाले बौद्ध भिक्षुओं के आग्रह से विध्यालंकार,

[3] https://www.youtube.com/watch?v=6GqeSrKujwU

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

विधयोदय तथा सरस्वती परिवेणों में हिन्दी अध्ययन-अध्यापन के लिए अनुमति दी गयी। बाद में तत्कालीन सरकार के तत्वावधान में परिवेणों की प्राचीन परीक्षाओं के लिए हिन्दी अध्ययन का अवसर दिया गया और इसी परीक्षा से उत्तीर्ण विद्यार्थियों को सरकार की पाठशालाओं में हिन्दी शिक्षण कार्य के लिए नियुक्त किया गया था। इन शिक्षकों ने हिन्दी के शिक्षण के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में भी बल दिया जिससे विद्यार्थी हिन्दी के प्रति अधिक मात्रा में उन्मुक्त और बढ़ने होने लगे।

इन परिवेणों में हिन्दी के अतिरिक्त अन्य मानवशास्त्रीय और समजशास्त्रीय के पाठ्यक्रमों का भी विशिष्ट स्तर पर अध्ययन-अध्यापन कार्य होने के हेतु परिवर्ती काल में सरकार के तत्वावधान में हिन्दी शिक्षण विश्वविद्यालयों के स्तर तक बढ़ावा दिया गया और बाद में विद्यालंकार परिवेण, केलनीय विश्वविद्यालय नाम से तथा विद्योदय परिवेण श्री जयवर्डनेपुर विश्वविद्यालय नाम से नामकरण किया गया था और इन संस्थाओं में प्रमुख प्राच्य भाषाओं के रूप में सिंहली, संस्कृत, पालि तथा हिन्दी पढ़ाने लगे जो आज श्री लंका के नामी विश्वविद्यालय हैं।

श्री लंका में आधुनिक मानक हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में कार्यरत महनुभावों में भन्ते गण का योगदान अग्रणी है। वे अपने विभिन्न अध्ययन-अध्यापन कार्य के लिए समय-समय पर कलकत्ता विश्वविद्यालय, शांति निकेतन, काशी विज्ञापीठ इत्यादि भारत के अध्ययन केंद्रों में जाया करते थे और वहाँ पर भारतीय भाषाओं से अपने शैक्षिक कार्य करते थे। भारत से ज्ञान प्राप्त विद्वानों में काशी विश्वविद्यालय से शास्त्रीय उपाधि प्राप्त भन्ते बम्बरंडे सिरिसीवली ने सन् 1941 में "श्री लंका विद्यालय" कोलंबो में हिन्दी शिक्षण के कार्य का श्री गणेश किया था। तदुपरांत इन्होंने "केलानीय विद्यालनकर परिवेण तथा रात्मलान परंधममचेतिय परिवेण में भी हिन्दी शिक्षण की नीव रखी थी। हिन्दी से संबंधित विद्वानों का मानना है कि यह श्री लंका में औपचारिक हिन्दी शिक्षण की एक महत्वपूर्ण घठना है। इसी अवधि में हिन्दी की पुस्तकें भी लिखने लगीं और उन पुस्तकों में विद्योदय परिवेण के शिक्षक भन्ते मेडिगल्ले सुमंगल द्वारा रचित "हिन्दी व्याकरण"(1948), भन्ते गिरीदर सुमनजोती तथा श्री डी.ए दसनयके द्वारा संपादित "हिन्दी-सिंहल शब्दकोश"(1951) और भन्ते बंबारेंड़े सिरिसीवली द्वारा रचित "हिन्दी भाषाव"(1952) तत्काल श्री लंका में हिन्दी-प्रचार के सहायक ग्रंथ माने जाते थे।

बढ़ती हिन्दी की लोकप्रियता के कारण सरकारी अनुदान में सन् 1955 में श्री लंका परीक्षा विभाग द्वारा "ज्येष्ठ पाठशाला प्रमाण पत्र" परीक्षा के लिए हिन्दी भाषा शामिल की गयी थी और उसी के साथ-साथ लगभग सन् 1959 में विश्वविद्यालयों में भी औपचारिक रूप में हिन्दी शिक्षण के कार्य के लिए अनुमति दी गयी थी। तदुपरांत परीक्षा विभाग द्वारा ही "उच्चतर पाठशाला प्रमाणपत्र"

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

परीक्षा लिए भी हिन्दी पढ़ने का अवसर दिया गया जिससे उत्तीर्ण विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय का प्रवेश भी मिलने लगा था।

इन दोनों अध्ययन केंद्र हिन्दी शिक्षण में कार्यरत थे और बाद में सन् 1959 में विद्यालंकार विश्वविद्यालय में इन चारों भाषाओं के लिए अलग-अलग विभाग खोले गये जिनमें से हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के रूप में नागपूर से पधारे भन्ते प्रो. आनंद कौशल्यायन जी नियुक्त किये गये थे। साथ ही साथ विदयोदय विश्वविद्यालय में लखनऊ से पधारे भन्ते गलगेदर प्रज्ञायानन्द जी ने हिन्दी शिक्षण का कार्य प्रारंभ किया था। भन्ते आनंद कौशल्यायन जी के पुनः अपने देश लौटने के साथ रिक्त विभागाध्याक्ष पद पर सन् 1969 में श्री लंकाई महिला का सहायक प्राध्यापक के रूप में नियुक्त किया गया जो प्रथम श्री लंकाई हिन्दी प्राध्यापिका थी।

इन प्रकार प्रारंभ की गयी हिन्दी शिक्षण की यात्रा पूरे श्री लंका में यात्रा कर चुकी और हिन्दी शिक्षण से श्री लंका का नाम विश्व स्तर तक पहुँच गया है। वर्तमान श्री लंका में आठ विश्वविद्यालयों में स्नातक, परास्नातक तथा प्रमाण पत्र के स्तर पर, लगभग बयासी स्कूलों में ज्येष्ठ प्रमाण पत्र तथा उच्चतर प्रमाण पत्र के स्तर पर, श्री लंका में स्थित भारतीय दूतावासों तथा दो कॉननसिउलेट कार्यालयों में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान तथा दक्षिण भारतीय हिन्दी प्रचार सभा के पाठ्यक्रमों का संचालन और पंद्रह से अधिक निजी संस्थानों में हिन्दी शिक्षण का कार्य औपचरिक रूप में किया जाता है।

प्रथम श्री लंकाई हिन्दी अधिव्याख्याता तथा हिन्दी की प्रथम प्रोफेसर इंद्रा दसनायक ने श्री लंका हिन्दी शिक्षण-अधिगम कार्य के साथ हिन्दी को वैश्विक रूप दिया था। उनके छत्र-छाया में पढे अधिकांश विद्यार्थी श्री लंका के सभी विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण का कार्य करते हैं। उनकी हिन्दी सेवा का सम्मान कई सम्मान समारोहों में किया गया। सन् 1975 में नागपूर में आयोजित प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन तथा सन् 1983 में दिल्ली में आयोजित तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलनों में इन्होंने प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया था। तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में विदेशों की हिन्दी सेवा के लिए इनको छायावाद युग की महान कवित्री महादेवी वर्मा के करकमलों से विश्व हिन्दी सेवी सम्मान से सम्मानित किया गया था। भूतपूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटील द्वारा भी इनकी हिन्दी सेवा का सम्मान किया गया तथा सन् 2020 में पद्मभूषण सम्मान से भी सम्मानित किया गया है।

श्री लंका की आधुनिक हिन्दी परिस्थिति पर ध्यान अवगत किया जाए तो श्री लंका में सिंहली और तमिल मुख्य भाषाएँ होती हैं और अंग्रेज़ी द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ायी जाती है। श्री लंकाई नागरिक सिंहली भाषा का अध्ययन मातृभाषा L1, द्वितीय भाषा L2 और अन्य भाषा L3 के स्तर पर अध्ययन करते है। श्री लंकाई सिंहली मातृभाषी लोग सिंहली भाषा मातृभाषा के रूप में पढ़ते हैं साथ ही तमिल और अंग्रेज़ी द्वितीय या तृतीय भाषा के रूप में पढ़ते हैं। तमिल भाषी मातृभाषा के रूप में

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

तमिल पढ़ते हैं और साथ ही सिंहली और अंग्रेज़ी भाषा को द्वितीय या तृतीय भाषा के रूप में पढ़ते हैं। इसके बदले हिन्दी भाषा को श्री लंका में विदेशी भाषा (FL) का दर्जा मिला है और हिन्दी शिक्षण श्री लंका के संदर्भ में कोई अनिवार्य भाषा नहीं है। इसलिए अन्य भाषाओं की तुलना में हिन्दी के अध्येताओं की संख्या में भी कमी देखने को मिलती है। कोई भी शिक्षार्थी को अपने पसंद के अनुसार हिन्दी का अध्ययन विदेशी भाषा शिक्षण के स्तर पर करने का अवसर है। सिंहली भाषा देश के सभी स्कूलों, विश्वविद्यालयों, अर्धसरकारी संस्थाओं, परिवेणों में L1, L2 और L3 के रूप में अनिवार्य भाषा के दर्जे पर पढ़ाई जाती है और तमिल भाषा भी उसी तरह पढ़ायी जाती है। हिन्दी ऐच्छिक विषय है इसलिए इन संस्थाओं में हिन्दी शिक्षण के लिए प्रमुखता नहीं दी जाती है। इसलिए छात्रों की संख्या में बहुत कम होती है मगर जो छात्र हिन्दी पसंद करता है वह लगन और प्यार से हिन्दी का अधिगम कार्य करता है।

पिछले दस सालों में स्नातक स्तर पर हिन्दी पढ़ाने वाले मुख्य विश्वविद्यालयों की पूर्वस्नातकों की संख्या इस प्रकार दिया जा सकता है। केलनीय विश्वविद्यालय में 470, जयवर्धनपुरे विश्वविद्यालय 456, सबरगमुव विश्वविद्यालय में 96 हैं।[4] श्री लंका में लगभग 82 स्कूलों में हिन्दी पढ़ायी जाती है उनमें से वार्षिक 10+ या उच्च स्तरीय प्रमाण पत्र परीक्षा में गत छह वर्षों में बैठे कुल छात्रों की संख्या 3231 है।[5] इन दोनों सरकारी संस्थाओं के अलावा श्री लंका में स्थित भारतीय दूतावासों में भी हिन्दी के कई पाठ्यक्रम पढ़ाए जाते हैं। इन संस्थाओं के गत आठ वर्षों के वार्षिक वार्ताओं के अनुसार स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र-कोलोमबो में 3765, सहायक उच्चायोग-केन्डी में 1952 और भारतीय वाणिज्य दूतावास- हमबांटोट में 1197 छात्र हिन्दी पढ़ते हैं।[6]

2010-2020 वर्षों में श्री लंका में हिन्दी छात्रों की संख्या

	विश्वविद्यालय/स्कूल/संस्था का नाम	2010-2020 विद्यार्थी/छात्रों की संख्या
1.	केलनीय विश्वविद्यालय	470
2.	जयवर्धनपुरे विश्वविष्यलय	456
3.	सबरगमूव विश्वविद्यालय	96
4.	स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र-कोलंबो (ICCRसंलग्न)	3765

[4] विश्वविद्यालयों के वर्षी वार्ताओंसे प्राप्त सूचनाओं के अनुसार।

[5] श्री लंका परीक्षा विभाग वेब साइट(statistic and school/candidate performances) वार्षिक वार्ता

[6] दूतावासों के हिन्दी संबंधित वार्षिक वार्ताओं के अनुसार

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

5.	सहायक उच्चायोग- केन्डी	1952
6.	भारतीय वाणिज्य दूतावास- हमबांटोट	1197
7.	स्कूल छात्र-छात्राएं	3231(2012-2016)

तालिका 01

2020-2021 दो वर्षों में श्री लंका के स्कूलों में भाषा पढ़ने वाले छात्रों की संख्या

	भाषा	2021 छात्र संख्या	2020 छात्र संख्या
	सिंहली	61687	64237
	तमिल	17845	11557
	English	1768	1785
	पालि	1214	1129
	संस्कृत	605	572
	अरबिक	1971	2135
	फ्रेंच	1194	1214
	जर्मन	377	385
	रूसी	40	31
0	हिन्दी	430	456
1	चीनी	368	369
2	जापानी	2202	1833

तालिका 02[7]

दोनों तालिकाओं की तुलना से ज्ञात होता है कि दस वर्षों में छात्रों की कितनी मात्रा हिन्दी का अध्ययन करते थे और दूसरी तालिका में यह दिखाता है कि हिन्दी भाषा की तुलना में दो वर्षों में सिंहली, तमिल और अन्य भाषाओं की संख्या कितनी मात्रा में बढ़ गायी है। सिंहली और तमिल

[7] तालिका 02 के सभी आँकड़े श्री लंका परीक्षा विभाग के 2021/2020 वार्षिक वार्ता से लिये गए हैं।(statistic and school/candidate performances)

छात्राओं की संख्या 2020 और 2021 में क्रमशः64237 और 61687 है तथा 11557 और 17845 है।तत्काल श्री लंका में हिन्दी अध्येताओं की संख्या के विपर्यय या उतार-चढ़ाव द्रष्टव्य है।

श्री लंका में पर्यटन और हिन्दी का संबंध पर ध्यान दें तो श्री लंका पर्यटन बोर्ड के आँकडों के अनुसार अगस्त 2022 में 16.1% भारतीय पर्यटक श्री लंका पहुंचे हैं। ये भारतीय पर्यटक श्री लंका में इसलिए पर्यटन करते हैं कि श्री लंका में भारतीय जनता के परम पवित्र रामायण से संबंधित पैंतालीस से अधिक तीर्थ स्थल पूरे श्री लंका में स्थित हैं। उसके अतिरिक्त भारतीय बौद्ध जनता से संबंधित बौद्ध धार्मिक तीर्थ स्थल श्री लंका में हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय लोग सुंदर समुद्रीय अनुभव तथा सुंदर प्राकृतिक सुष्मा का अनुभव श्री लंका में बड़े आसानी से पा सकते हैं। इन भारतीय पर्यटकों के लिए हिन्दी भाषा के मार्गदर्शकों की आवश्यकता अधिक है जिसकी पूर्ति हेतु श्री लंका पर्यटन बोर्ड से हिन्दी तथा रामायण के बढ़ावा देने हेतु कार्यक्रम किए जाते हैं और साथ ही साथ हिन्दी मार्गदर्शकों का भी प्रशिक्षण किया जाता है।

श्री लंका में हिन्दी अनुवाद के क्षेत्र में भी विकास द्रष्टव्य है। श्री लंका में प्रति हफ्ते दूरदर्शन पर हिन्दी फिल्मों, धारावाहिकों तथा गानों के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं जिनके अनुवाद, डबिंग और उपशीर्षक देने के कार्य के लिए अवसर मिलते हैं। इसके अतिरिक्त दूरदर्शन, आकाशवाणी तथा समाचर एजंसियों को भी समाचार अनुवादकों की आवश्यकता होती है। जब भारतीय राजनीतिज्ञ दोनों देशों के राजनीतिक संबंध के लिए श्री लंका में यात्रा करते हैं तब दुभाषिये के कार्य के लिए भी हिन्दी जानने वालों की अवस्यकता होती है।

भारत और श्री लंका के बीच अधिक आर्थिक स्तर की परियोजना, व्यापार, क्रीडा, शैक्षिक तथा विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ अधिक होती हैं जिनके लिए कभी-कभी हिन्दी भाषा की आवश्यकता होती है।

श्री लंका के शैक्षिक क्षेत्र में हिन्दी का प्रचलन द्रष्टव्य है। उसका कारण है कि हिन्दी भाषा या अन्य कोई विदेशी भाषा पढ़ने से विद्यार्थी आसानी से विश्वविद्यालय प्रवेश पा सकते हैं और वे विश्वविद्यालय में स्नातक और परस्नातक के स्तर तक हिन्दी पढ़ने का अवकाश तीन विश्वविद्यालयों में उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त भारतीय विश्ववविद्यालयों में भी हिन्दी, संगीत, नृत्य और हिन्दी के परास्नातक स्तर की पढ़ाई का अवसर मिलते हैं।

इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति तथा आवश्यकताओं के लिए आजकल श्री लंका में विद्यार्थी हिन्दी का अध्ययन करते हैं लेकिन कभी-कभी हिन्दी के लिए अवसरों की कमी होने के कारण अध्येताओं की संख्या में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं फिर भी छात्र हिन्दी बिना छोड़े लगाव से हिन्दी अध्ययन-अध्यापन कार्य करते हैं जो प्रसन्नता और गर्व की बात है।

संदर्भ:- REFERENCE:-

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

1. दसनायक, डॉ. इन्द्रा (1999) श्री लंका के केलणिय विश्वविद्यालय में हिन्दी शिक्षण के चालीस वर्ष
2. □□□□□□□□□□□□□□,□□□□. □□□□ □□□□□, **19** □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□,□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□, □□□□□□□□□, **08** □□□□□□ **2013.**
3. 74th anniversary of sinhala cinema**,** Daily Mirror **)**Sri Lanka**) 18** जनवरी **2021**
4. Coparahewa, Sandagomi (2011) Remembering Rabindranath Tagor.
5. Coparahewa, Sandagomi, Tagore's visits to Sri Lanka, Research Gate, January 2013
6. https://tradingeconomics.com/sri-lanka/tourist-arrivals. □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□-□□□□□□□□
7. □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□.
8. **https://www.doenets.lk/statistics. □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ 2021/2020 □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□(statistic and school/candidate performances(**